इकाई 24
क्षेत्र शोध-I

इकाई की रूपरेखा

24.1 प्रस्तावना

24.2 क्षेत्र शोध का इतिहास

24.3 मानवजाति वर्णन/नृजातिवर्णन

24.4 विषय चयन

24.5 शोध अभिकल्पना

24.6 क्षेत्र में प्रवेश प्राप्ति

24.7 मुख्य सूचक

24.8 सहभागी अवलोकन (क्षेत्रीय अनुसंधान)

24.9 सारांश

24.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अध्ययन के उद्देश्य

आशा है कि इकाई 24 पढ़ने के बाद, आप:

- क्षेत्र शोध के इतिहास की खोज कर पाएंगे;
- नृजाति वर्णन के अर्थ की चर्चा कर पाएंगे;
- शोध के विषय चुनकर उसकी योजना की अभिकल्पना तैयार कर सकेंगे;
- क्षेत्र में प्रवेश के तरीके सीख पाएंगे और ऐसे लोगों को खोज पाएंगे जो सूचना देने के इच्छूक हों तथा सूचना दे सकते हैं; और
- सहभागी के रूप में अवलोकन की कला का प्रयोग कर सकेंगे।

24.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम क्षेत्रशोध के विषय में ओर इसे करने की पद्धति से संबद्ध हैं। सामाजिक विज्ञान में क्षेत्रकार्य द्वारा किए गए शोध का विशिष्ट निहितार्थ है। क्षेत्र कार्य का अर्थ लोगों से उनके प्राकृतिक आवास में मिलना उन्हें देखना ताकि एक लंबी अवधि के दौरान उनके जीवन के विषय में सामाजिक रूप से आवश्यक तथ्य एकत्रित करना होता है।

क्षेत्रकार्य की इस अवधारणा और पत्रकारों के कार्य में भेद करना चाहिए क्योंकि वे भी क्षेत्र में सूचना एकत्रित करने जाते हैं और समाचार रिपोर्ट तैयार करते हें। क्षेत्रकार्य, बाज़ार संस्थाओं के कार्य से भी भिन्न होता है, जो अन्वेषकों को विशिष्ट सामान या ब्रांड के उपभोक्ताओं (और संभावित ग्राहकों) की प्रतिक्रिया पर सामग्री/आंकड़ें एकत्रित करने के लिए भेजती हैं। इसकी तुलना में, क्षेत्रकार्य किसी समुदाय (किसी गांव, शहरी झोपड़ पट्टी या संस्था आदि) के सदस्यों के साथ लंबे समय तक रहकर किसी विषय पर गहन सामग्री/आंकड़े एकत्रीकरण होता है।

24.2 क्षेत्र शोध का इतिहास

क्षेत्रकार्य का शास्त्रीय अर्थ, ब्रोनिसलॉ मेलिनास्की (1922 ए) के कार्य से लिया गया है। उसने मानवविज्ञानी क्षेत्रकार्य के लिए सहभागी अवलोकन की पद्धति की आधार शिला

रखी। 1900 के आंरभिक काल से पूर्व, अधिकांश मानव जाति वर्णन संबंधी सूचना , ऐसे लोगों द्वारा एकत्रित की जाती थी जिन्हें मेलिनोस्की अनाड़ी (मिशनरी, उपनिवेशी प्रशासक और यात्री) कहता है और खोपड़ियों के नाप तथा शारीरिक विशेषताओं के उल्लेख द्वारा सर्वेक्षण का कार्य किया गया है। (ओ' रेली 2005 : 7)

मेलिनोस्की का मानना था कि मानव जाति वर्णन कर्ता को कम से कम एक वर्ष किसी समुदाय में रहकर, उन लोगों की भाषा सीखकर और उनका व्यवहार रिकॉर्ड करके क्षेत्रकार्य करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में , क्षेत्रकार्य की अवधारणा का अर्थ "वहां जाना" है अथवा, जॉन बॅटी (1964) के शब्दों में "अन्य संस्कृति" का अध्ययन करना है। पाश्चत्य परंपरा के अंतर्गत, मानवविज्ञानी को किसी अन्य समाज का अध्ययन करना होता था, जिसके तरीके मानव विज्ञानी के लिए अंजान होते हैं और उसे समाज को देखना, उसका विवरण देना और विनिबंध के रूप में विश्लेषण करना होता हैं। यह मुख्यतः इस तथ्य का प्रत्युतर था कि लघु स्तर की जनजाति संस्कृतियां तेजी से लुप्त हो रही थीं तथा उनकी संस्कृतियों, प्रथाओं और पद्धतियों को रिकॉर्ड करने की आवश्यकता थी। इसलिए क्षेत्रकार्य लोगों से मूल सूचना एकत्रित करने के लिए "वैज्ञानिक पद्धति" के रूप में उभरा।

क्षेत्रकार्य के महत्व को बीसवीं शताब्दी के आरंभ में भी माना गया तब शिकागो यूनिवर्सिटी के समाजशास्त्रियों ने विषय अध्ययन पद्धति "**केस अध्ययन पद्धति** (case study method)" के माध्यम से कार्य करना आरंभ किया। इस पद्धति के लिए शिकागों और न्यूयार्क जैसे बड़े शहरों के भीतर छोटे समुदायों जैसे शहरी झोपड़पट्टी से गहन केस अध्ययनों को एकत्रित करने की आवश्यकता थी। इस पद्धति के माध्यम से, समाजशास्त्रीयों ने उस समय की प्रभावशाली "वैज्ञानिक सांख्यिकीय पद्धति" के समक्ष एक बड़ी चुनौती रख दी। शिकागो के समाजशास्त्रियों ने रोजमर्रा की स्थितियों में न केवल आमने सामने की अन्तर्क्रियाओं (यानि सरल व अनौपचारिक) का अध्ययन किया, बल्कि उन्होंने सामाजिक जगत के विवरण भी प्रस्तुत किए जिससे जीवन इतिहास की पद्धति तथा डायरियों और पत्रों जैसे दस्तवेज़ों का प्रयोग भी प्राप्त हुआ। ब्रिटिश तथा अमरीकी क्षेत्र शोध की परंपराओं का उल्लेख करने का यह अर्थ नहीं है कि क्षेत्र से सामग्री/आंकड़ें प्राप्त करने की अन्य महत्वपूर्ण परंपराएं नहीं हैं। उदाहरण के लिए, क्षेत्र शोध की जर्मन परंपरा में अन्य सूचना और क्षेत्रीय परिकल्पना के निर्माण के लिए क्षेत्र सामग्री सहित संग्रहालय नमूनों का संग्रह शामिल है। फ्रांसिसी परंपरा दुर्खाइमवादी समाजशास्त्र से काफी प्रभावित है जबकि डच परंपरा मानवविज्ञान, भाषा और साहित्य में प्रशासकों के शैक्षिक प्रशिक्षण पर केंद्रित है। मैज (1963), ईस्के (1974) और वैक्स (1971) ने समाजशास्त्र में क्षेत्र पद्धतियों के विकास पर चर्चा की है।

गहन क्षेत्रकार्य द्वारा 'देशी' दृष्टिकोण को समझने पर मेलिनोस्की द्वारा दिए जाने वाले बल के लिए यह आवश्यक था कि मानवविज्ञानी को 'वास्तविक जीवन तथा विशिष्ट व्यवहार की अतोलनीयता' अर्थात् किसी संस्कृति प्रबंधन तथा कार्य करने के तरीके को पूर्णतः समझने के लिए संस्कृति के प्रत्येक पक्ष से संबंधित सामग्री/आंकड़ें एकत्रित करना होता था। मेलिनोस्की के अतिरिक्त, फ्रांसबोआस (1920) ने भी क्षेत्रकार्य को मानवविज्ञानियों के लिए प्रशिक्षण के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में प्रचलित किया। बोआस का अत्याधिक प्रभाव था क्योंकि वह "प्राचीन समाजों" से न केवल उनके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में बल्कि उनके शारीरिक, भाषिक, मनोवैज्ञानिक तथा भौगोलिक आयामों के संदर्भ में भी सामग्री/आंकड़े एकत्रित करने पर बल देता था। इसलिए बीसवीं शताब्दी के आरंभ से, क्षेत्रकार्य सामाजिक शोध का एक आवश्यक पक्ष बन गया और सामाजिक जगत के प्रत्येक शोधार्थी का उसमें प्रवेश करना अपेक्षित था।

सहभागी अवलोकन के प्रयोग द्वारा किसी एकाकी समुदाय के अध्ययन पर केंद्रित होना मानवजाति वर्णन संबंधी कार्य की विशेषता बन गया। "मानवजाति वर्णन" शब्द का महत्व एकाकी समुदाय में सामाजिक व्यवहार के अवलोकन और विवरण की अवधारणा के फलस्वरूप है। भारत में अधिकांश मानवविज्ञानी गहन अध्ययन के लिए गांव पर ध्यान देते थे। उदाहरण के लिए रामपुरा पर श्रीनिवास (1976) का अध्ययन क्षेत्र आधारित शोध कार्य का अच्छा उदाहरण है।

समय के साथ क्षेत्र कार्य की परिभाषा और प्रकृति में बदलते सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ और क्षेत्र में हो रही सैद्धांतिक प्रगति के अनुसार अत्यधिक परिवर्तन हुआ है। क्षेत्र की अवधारणा किसी अन्य संस्कृति के अध्ययन से हटकर स्वयं अपनी संस्कृति के अध्ययन और अतिलघु स्तर की इकाई के अध्ययन से हटकर बड़ी सामाजिक इकाई के अध्ययन पर आ गई है। हांलाकि "क्षेत्र में जाने" की अवधारणा सामाजिक वैज्ञानिकों में अब भी प्रचलित है, यह किसी आबद्ध/बंद समुदाय की छवि को नही उभारती है। आज, हम पाते हैं कि सामाजिक वैज्ञानिक न केवल गांव, जातियों, जनजातियों का अध्ययन करते हैं बल्कि सहकारियों, गैर-सरकारी संस्थाओं, सिनेमा, बाज़ार, बेघर लोगों, बच्चों और साहित्य तक का अध्ययन करते हैं। आजकल सामाजिक वैज्ञानिक बहुस्थानीय क्षेत्र शोध करते हैं और इस प्रकार के विनिबंध तैयार करते हैं जो वास्तविकता पर प्रतिस्पर्धी परिप्रेक्ष्यों के प्रति संवेदनशील होते हैं (क्लीफोर्ड और मार्कस 1986)।

24.3 मानवजाति वर्णन

मानवजाति वर्णन को शोध करने के तरीके के रूप में देखा जाता है जिसमें कुछ निर्धारित प्रक्रियाओं और नियमों के अनुसार लोगों के प्रतिदिन के ज़ीवन के सामाजिक अर्थ को समझने के लिए उनके प्राकृतिक विन्यास अथवा क्षेत्रों में उनका अध्ययन किया जाता है। यह सहगामी अवलोकन के द्वारा मानवीय समूहों के क्षेत्र-आधारित, गुणात्मक शोध को दर्शाता है। मानवजाति – वर्णन को हम ऐसे विषय के रूप में भी परिभाषित कर सकते हैं जिसमें नृजातीय समूहों का तुलनात्मक अध्ययन शामिल हो। प्रायः लघु ओर बृहंत् मानवजाति वर्णन के बीच भेद किया जाता है (कभी-कभी जिसे सामान्य मानवजाति वर्णन भी कहा जाता है) बृहत और लघु मानवजाति वर्णन के बीच अंतर के लिए बॉक्स 24.1 देखें।

बॉक्स 24.1: बृहत और लघु मानवजाति वर्णन के बीच अंतर

बृहत मानवजाति वर्णन में एक समूह के जीवन की संपूर्ण पद्धति का विवरण देने का प्रयास किया जाता है जबकि लघु मानवजाति वर्णन में किसी बड़े विन्यास, समूह अथवा संस्था में विशिष्ट बिंदुओं पर विशिष्ट पक्षों पर ध्यान दिया जाता है। इन बिंदुओं का इस प्रकार चयन होता है कि वे सहभागियों के जीवन और बदले में बड़े समूह के जीवन के महत्वपूर्ण तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इन दोनों में दूसरा महत्वपूर्ण अंतर यह है कि बृहत मानवजाति वर्णन अनवेषणाधीन समूह अथवा संस्था के सदस्यों के आमने सामने की परस्पर क्रियाओं पर विश्लेषणात्मक रूप से अधिक ध्यान देता है। इन अंतरों के बावजूद, ये दोनों सहभागियों के दृष्टिकोण से सामान्य सामुदायिक जीवन को काफी महत्व देते हैं (बर्ज 2001 : 136)। प्रायः दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं।

'ओ.' रेली (2005:3) मानवजाति वर्णन भी न्यूनतम परिभाषा निम्नलिखित शब्दों में देता है।

> यह पुनरावृतीय आगमनात्मक शोध है जो अध्ययन द्वारा विकसित होता है। यह पद्धतियों के एक परिवार पर आधारित है जिसमें मानवीय ऐजेंट के प्रतिदिन के

जीवन के संदर्भ में उनके साथ प्रत्यक्ष तथा निरंतर संबंध बना रहता है। क्षेत्रकार्यकर्ता सभी गतिविधियों को देखता है, प्रत्येक बात को सुनता है, प्रश्न पूछता है और समृद्ध रूप से लिखित वर्णन प्रस्तुत करता है। यह विवरण मानवअनुभव की अखंडनीयता को दर्शाता है और सिद्धांत की तथा शोधार्थी की भूमिका को स्वीकार करता है। मानवजाति वर्णन, मनुष्य को आंशिक रूप से वस्तु और आंशिक रूप से विषय के रूप में देखता है।

क्षेत्र तथा उसके विश्लेषण के प्रस्तुतीकरण की अनेक प्रक्रियात्मक पद्धतियों की उपस्थिति के बावजूद, क्षेत्रकार्य की पद्धतियों में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। दूसरे शब्दों में, क्षेत्र कार्य करने के लिए कुछ मानक पद्धतियां और तकनीकें होती हैं। अनेक शोधार्थी मूल्य निष्पक्ष स्थिति अपनाने के पक्ष में होते हैं यानि ना तो अपने दृष्टिकोण को थोपना और ना ही सामाजिक अथवा राजनीतिक मुद्दों पर कोई पक्ष लेना। यद्यपि अनेक सामाजिक शोधार्थियों ने मूल्य निष्पक्षता के इस दिखावे के विरोध में तर्क दिए हैं। नारीवादियों ने ऐसी शोध उन्मुखता बनाई है जो शोधार्थी और उसके विषयों दोनों के लिए सुविधाजनक है (बॉक्स 24.2 देखें)। शोधार्थी सुनते अधिक और बोलते कम हैं। इस रूझान ने शोध प्रक्रिया को मानवीकृत किया है और इस बात पर बल दिया है कि शोधार्थियों को अपने विषयों के साथ संबद्ध और अपने विचारों के प्रति निजवाचक (reflexive) होना चाहिए।

बॉक्स 24.2: नारीवादी उपदेश के क्षेत्र में सुगम्यता

उर्सुला शर्मा (1981 : 37) कहती हैं,

अनेक क्षेत्रों में पुरुष तथा स्त्री के अनुभव भिन्न नहीं होते हैं और इनमें कोई विशिष्ट पुरुष/स्त्री मॉडल नहीं होता है। किंतु कुछ आगे वह कहती है, मानवजाति वर्णनकर्त्ता के लिए स्त्रियों की उपस्थिति के प्रति संवेदनशीलता ही नहीं बल्कि विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों और उसके अनुसार उनके द्वारा व्यक्त विभिन्न विचारों और अनुभवों में अंतर के प्रति संवेदनशीलता की भी आवश्यकता होती है।

शर्ले आर्डनर (1984) ने उपरोक्त में यह जोड़कर लिखा है कि उस दबाव के अनुरूप है जो "मूकता (muting)" को समझने के लिए आवश्यक बृह्मांड अथवा उपदेश क्षेत्र को पहचानने के महत्व पर दिया गया है।

24.4 विषय चयन

हांलाकि मानवजाति वर्णन की प्रक्रिया में, सर्वेक्षण से भिन्न काफी लचीलापन होता है, क्षेत्र शोध को नियोजित, संयोजित और व्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है। क्षेत्र का दौरा करने से पूर्व, शोधार्थी सावधानीपूर्वक शोध अभिकल्पना तैयार करता है जिसमें संबंधित विषयों जैसे शोध का विषय, पूछे जाने वाले प्रश्न, प्रयोग की जाने वाली आंकड़े एकत्रीकरण की तकनीकें, त्रिभुजन का प्रयोग, आंकड़ें विश्लेषण की तकनीक तथा ध्यान दिए जाने योग्य नैतिक प्रणालियों की रूपरेखा होती है।

समाज विज्ञान में एक प्रचलित मत यह है कि क्षेत्र शोध से पूर्व कोई सुगठित परिकल्पना नहीं होनी चाहिए क्योंकि क्षेत्र स्वयं कुछ प्रश्न देता है। मानवविज्ञानियों से एक कोरी स्लेट की भांति क्षेत्रकार्य आरंभ करने की अपेक्षा की जाती है क्योंकि यह नहीं चाहता/चाहती कि कोई पूर्वाग्रह, रूढ़ि या प्राथमिकता घेर ले। हालांकि नवीन सोच यह सुझाव देती है कि शोध अभिकल्पना, मानवजाति वर्णनकर्ताओं के लिए महत्वपूर्ण होती है क्योंकि वह परियोजना का मार्गदर्शन करती है। इस अभिकल्पना का निर्माण क्षेत्र में लचीलनपन तथा तत्काल निर्णय लेने की अनुमति देता है अर्थात् यह समस्या उत्पन्न होने के साथ ही अनिर्धारित परिवर्तनों की अनुमति प्रदान करता है। शोध किसी निष्पक्ष कारण से मात्र ही कभी किया जाता है। शोध के विषय का चयन सामान्यतः किसी शोधान्मुखी स्थिति से प्राप्त होता है।

इसके आगे, सभी स्त्री पुरुष, सामाजिक समूहों के उत्पाद हैं जिनमें मूल्य, व्यवहार तथा विश्वास किसी विशिष्ट प्रकार से लोगों को उन्मुख बनाते हैं।

निजी जीवनवृत अथवा किसी विषय के साथ गहन परिचय, मानवजाति वर्णकारों में अधिक सामान्य तथा स्वीकृत हो गया है। निष्पक्षता के दिखावे को बनाए रखने से, शोधार्थी सदैव अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं या निजी अनुभवों की जांच से बच जाता है जबकि, शोधार्थियों द्वारा दिए गए विषयात्मक उपदेश पाठक को बेहतर तरीके से यह समझने का अवसर देते हैं कि किसी शोध क्षेत्र को क्यों चुना गया है, उसका किस प्रकार अध्ययन किया गया और वह किसने किया। उदाहरण कि लिए, यदि कोई नर्स कैंसर के मरीजों पर अध्ययन करती है तथा बताती है कि उसने इस विषय का चुनाव, अपने घर में किसी सदस्य के इस बिमारी से रोगग्रस्त होने के बाद किया, तो उससे उसके शोध की गुणवत्ता कम नहीं होती है। यद्यपि इससे उस पर अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है कि शोध कौन और क्यों कर रहा है। इससे पाठक को यह समझने में मदद मिलती है कि कुछ विशेष प्रकार के प्रश्न क्यों पूछे गए तथा कुछ अन्य प्रश्न क्यों नहीं पूछे गए। आज, अनेक शोधार्थी विकास संबंधी मुद्दों, लिंग, पर्यावरण तथा मानवाधिकार से जुड़ी समस्याओं पर कार्य करना पसंद करते हैं, जो धन तथा नौकरी की संभावनाओं की उपलब्धता के संदर्भ में महत्वपूर्ण लगती हैं।

व्यक्तिपरक निबन्धों (subjective discourses) के प्रस्तुतीकरण या शोधार्थी के विचारों को भी सुनने से शोध जगत की अंतर्दृष्टि मिलती है। रोजमर्रा की वास्तविकताएं मानवीय भावनाओं द्वारा अत्याधिक प्रभावित होती हैं और इन भावनाओं का प्रस्तुतीकरण वैध है।

विषय में निजी अथवा सैद्धांतिक रुचि के अतिरिक्त, क्षेत्र शोध की संभावना पर भी विचार किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, भारत के उत्तरपूर्वी राज्यों में, आंतकवाद के कारण क्षेत्र शोध करना सरल नहीं है। इसी प्रकार, बिहार और आंध्र प्रदेश के कुछ जिलों में, नक्सलवादी आंदोलन के कारण क्षेत्र शोध कठिन हो सकता है।

अभ्यास 24.1

वी. के. श्रीवास्तव द्वारा संपादित पुस्तक, मेथेडोलॉजी एंड फील्डवर्क में गेराल्ड डी. बेरेमान (2004:157.190) का मानवजाति वर्णन तथा उत्पाद पर अध्याय 7 पढ़ें। 'मानवजाति वर्णनाकार क्राफ्ट' विषय पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें तथा अपने द्वारा पढ़े गए पाठ और लिखित टिप्पणी के आधार पर अपने शोध के विषय का एक संभावित विषय चुनिए। इस विषय को चुनने के कारण बताइए तथा लगभग 500 शब्दों में इसके सैद्धांतिक और व्यवहारिक पक्ष समझाइए।

24.5 शोध अभिकल्पना

ब्रियूअर (2000 : 58) मानवजाति वर्णन संबंधी शोध अभिकल्पना की सामान्य योजना पर चर्चा करता है जिसमें विषय की मुख्य विशेषताएं तथा शोध के लक्ष्य एवं उद्देश्य होते हैं (बॉक्स 24.3 देखें)।

बॉक्स 24.3: मानवजाति वर्णन संबंधी शोध अभिकल्पना की सामान्य योजना

- क्षेत्र और सूचकों के चुनाव के लिए प्रयुक्त प्रतिदर्श (Sampling) के रूप ओर शोध स्थान/क्षेत्र का चयन।
- समय और धन सहित शोध के लिए उपलब्ध संसाधन।
- क्षेत्र में अनुभव किए जाने वाली घटनाओं और समय का प्रतिदर्श अर्थात मानवजाति वर्णनकर्त्ता किन घटनाओं का अध्ययन करना चाहता है और समय प्रबंधन की सामान्य समझ।

- क्षेत्र में प्रयुक्त सामग्री/आंकड़ें एकत्रीकरण की पद्धतियां/तकनीकें।
- क्षेत्र में किस द्वारा प्रवेश, विश्वास और संबंध की किस प्रकार स्थापना।
- व्यक्ति की आयु, लिंग, प्रस्थिति और वर्ग के आधार पर भूमिकाओं का संभावित अनुपालन।
- मत्रिक और गुणात्मक विवरणों के लिए विशिष्ट प्रकार से प्रयोग किए जाने वाले विश्लेषण के प्रकार।
- क्षेत्र से बाहर निकलना और परिणाम बताने के लिए प्रयोग किए जाने वाले प्रसार के रूप।

मानवजाति वर्णन शोध, सामग्री/आंकड़े एकत्रीकरण की कोई विशिष्ट पद्धति नहीं है, बल्कि शोध की एक शैली है जो उसके उद्देश्यों द्वारा पहचानी जाती है जिसमें किसी क्षेत्र के लोगों की गतिविधियों और उनके अर्थों को समझना होता है और एक अभिगम होता है जिसमें इस विन्यास के साथ निकट संबंध, प्रायः भागीदारी होती है (ब्रियूअर 2000 : 59)। आरंभ करने के लिए स्वयं को रुचिकर लगने वाली समस्याओं या मुद्दों की सामान्य अवधारणा से क्षेत्र शोधार्थियों में विन्यास के प्रति समझ पैदा होती है जो इन समस्याओं या मुद्दों की जांच के लिए आवश्यक है। कुछ संभावित परिकल्पनाएं तैयार करते हैं जबकि शोध प्रश्नों को विस्तृत रूप से बहुत कम पूर्वगठित किया जाता है। विन्यास के उजागर होने के साथ शोध प्रश्न और सैद्धांतिक मुद्दे उभरने लगते हैं। इसलिए क्षेत्र विन्यास को निर्धारित करना और उस विन्यास के प्रति सुगमता प्राप्त करना आवश्यक होता है। यहां पर शोध विन्यास में प्रवेश पाने का प्रश्न उठता है। यह निर्णय लेना होता है कि क्षेत्र में शोधार्थी के रूप में उन्मुक्त रूप से प्रवेश किया जाए अथवा विन्यास में मौजूद होने का वास्तविक उद्देश्य बताए बिना गुप्त रूप से शोध किया जाए। क्षेत्र शोधार्थियों में गुप्त शोध की नैतिकता को लेकर निरंतर बहस होती रहती है। (डेंजिन 1970 और 1978)। शोध विन्यास के प्रति सुगमता "प्रतिक्रियात्मक" प्रभावों के मुद्दों, अर्थात शोधार्थियों की उपस्थिति के चलते विन्यास में परिवर्तन से भी जुड़ी होती है।

इस प्रकार के सामाजिक शोध में सामग्री/आंकड़ें एकत्रीकरण की विभिन्न पद्धतियां प्रयोग की जाती हैं। जैसे सहभागी अवलोकन (Participant Observation), गहन साक्षात्कार, निजी दस्तावेज़ों का प्रयोग और उपदेश विश्लेषण। चूँकि इस शोध में अनेक पद्धतियां होती हैं, इसमें डेंजिन (1970) द्वारा आरंभ किया गया शब्द, त्रिभुजन (Triangulation) का प्रयोग होता है। शोधार्थियों का विन्यास में निभाई जाने वाली भूमिकाओं पर निर्णय ले लेना चाहिए– पूर्ण प्रेक्षक, सहभागी के रूप में प्रेक्षक, प्रेक्षक के रूप में सहभागी अथवा पूर्ण सहभागी। सामग्री/आंकड़ें एकत्रीकरण में अध्ययनशील विन्यास की प्रत्येक गतिविधि को ध्यान से देखना, सुनना और उसके विवरणों को रिकॉर्ड करना शामिल होता है। इसके अतिरिक्त इस प्रक्रिया में इन प्रेक्षणों को व्यवस्थित रूप से प्रबंधित सामग्री/आंकड़े में अनूदित करना शामिल होता है।

गैर-सरकारी संस्थाओं और विकास की ऐजेंसियों ने क्षेत्रकार्य के एक अन्य रूप को प्रचलित किया है जिसका मुख्य कारण लोगों को उनके प्राकृतिक विन्यास में अध्ययन करने और उनके दृष्टिकोण को समझने की शास्त्रीय मान्यता है। यद्यपि उनकी क्षेत्रकार्य प्रणालियां, प्रक्रिया और रणनीति दोनों प्रकार से काफी भिन्न है। गैर-सरकारी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं के द्वारा किया गया क्षेत्रकार्य प्रायः परियोजना प्रेरित (Project driven) होता है और उसे कम समय में पूरा किया जाना होता है इसलिए उन्होंने लोगों की सामान्य गतिविधियों के अतिविवरणशील अर्थों की उपेक्षा करके जल्दी सामग्री/आंकड़ें एकत्रीकरण और उसके विवरण का अधिक महत्व है। इस प्रकार के अभ्यास को विभिन्न नाम दिए गए हैं जैसे

सहभागी ग्राम मूल्यांकन (पी.आर.ए.), तीव्र ग्राम मूल्यांकन (आर. आर.ए.) आदि। इन तकनीकों पर अधिक चर्चा इस इकाई में बाद में की जाएगी। यहां एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इन रणनीतियों का गठन विशिष्ट उद्देश्यों के लिए होता है और ज्ञान की खोज इसका उद्देश्य नहीं है, जैसा मानवजाति वर्णन में होता है।

24.6 क्षेत्र में प्रवेश प्राप्ति

शोधार्थी को सावधानी से क्षेत्र में प्रवेश करना होता है। क्षेत्र में प्रवेश प्रायः क्षेत्र की प्रकृति और शोधार्थी की सामाजिक पृष्ठभूमि जैसे घटकों पर निर्भर करता है। आरंभिक दिनों में मानव विज्ञानी/समाजशास्त्री (जैसे श्वेत पुरुष एवं स्त्रियां) जनजातीय उपनिवेशों में मालिकों, प्रशासकों, मिशनरियों अथवा यात्रियों की तरह प्रवेश करते थे। भारत जैसे विकासशील देशों में क्षेत्र शोधार्थी प्रायः मध्यम वर्गीय शहरी शिक्षित व्यक्ति होता है। क्षेत्र में सफल प्रवेश को निर्धारित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण घटक प्रजाति, जाति, जातीयता, आयु और लिंग है। लीला दुबे (1975) बताती हैं कि किस प्रकार उसके जीवन में क्षेत्रकार्य की तीन भिन्न अवस्थाओं में लिंग, वैवाहिक प्रस्थिति, आयु और सामाजिक प्रस्थिति प्रतिवादियों के साथ संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण थे।

प्रवेश में गलतियों से क्षेत्रकार्यकर्ता की सफलता को खतरा हो सकता है। सही प्रकार से प्रवेश द्वारा संबंध बनाने में मदद मिलती है। क्षेत्र में प्रवेश बिंदुओं पर स्थित महत्वपूर्ण व्यक्तियों को "द्वारपाल" कहते हैं। प्रवेश पाने के लिए व्यक्ति को औपचारिक तथा अनौपचारिक संबंधों का उपयोग करना पड़ता है। पुरानी जान पहचान तथा शोध संस्थाओं अथवा प्रायोजक ऐजेंसियों से परिचय पत्र प्रवेश पाने में सहायक होते हैं। प्रायोजकों की प्रतिष्ठा और द्वारपालों का सहयोग प्रभाविकता सिद्ध करने में मदद करता है। दूसरी ओर, शोधार्थी को यह ध्यान रखना चाहिए कि व्यक्ति का व्यवहार उसकी प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है। द्वार पालों से बिना अनुमति प्राप्त किए क्षेत्र में प्रवेश करने से शोधार्थियों के लिए समस्या उत्पन्न हो सकती है। शोधार्थी जैसे द्वारापालों के माध्यमों से प्रवेश करता है, वह वैसे ही उनको सूचित करने के बाद बाहर निकलता है।

संपूर्ण समुदाय के अध्ययन के दौरान प्रवेश के सर्वाधिक खुले स्थान उन लोगों के बीच होते हैं जो व्यक्ति की सामाजिक वर्गीय पृष्ठभूमि से जुड़े होते हैं। किंतु किसी निर्धारित स्तर पर सभी संपर्कों का समान महत्व नहीं होता है। आरंभिक अवस्था में, शोधार्थी नेतृत्व के स्थानों पर मौजूद लोगों को इस आशा में पहचानने का प्रयास करता है कि वे महत्वपूर्ण संपर्क और अनौपचारिक प्रायोजकता उपलब्ध करवाएंगे। कुछ महत्वपूर्ण लोगों की स्वीकृति प्राप्त करने के पश्चात् शोधार्थी ऐसे तरीकों द्वारा भाग लेने का प्रयास करता है जो एक स्वीकृत निजी पहचान स्थापित करते हैं जिससे आरंभिक प्रायोजकता की सीमाओं के पार निकलना संभव हो पाता है।

परियोजना के आरंभिक चरणों में, जब शोधार्थी अभी सामाजिक आधार को सुदृढ़ कर रहा होता है, अपनी प्रक्रिया गठित करना उपयुक्त नहीं होता है। जब व्यक्ति सामाजिक आधार स्थापित करने में सफल हो जाता है तो उसे बिना प्रश्न पूछे ही सूचना मिल जाती है। संभावित सहभागियों के साथ पहला संपर्क ऐसा होना चाहिए जिससे उनके भय दूर हो जाए और उनका विश्वास बढ़े तथा वे शोध परियोजना में भाग लेने के लिए इच्छुक हो जाएं। यदि व्यक्ति अपने सगे संबंधियों के माध्यम से संपर्क स्थापित करता है तो उसे स्वीकृति प्राप्त करने में आसानी होती है। हालांकि किसी विशिष्ट परिवार के साथ स्वयं को संबद्ध करने से अपनी स्वतंत्रता पर बंधन हो जाता है।

पहला कार्य लोग यह करते हैं कि शोधार्थी को विशेष स्थिति में रखने की कोशिश करते हैं। जिस स्थान पर व्यक्ति स्थित हैं वह स्थान उन लोगों को स्वीकार्य होना चाहिए जिन

लोगों का अध्ययन होना है। उदाहरण के लिए व्यक्ति की पहचान केवल उच्च जाति अथवा निम्न जाति से नहीं की जा सकती । व्यक्ति को स्थिति के व्यापक अध्ययन के लिए बराबर भागों में विभाजित करना पड़ता है। किंतु उसी समय यह दावा करना असंभव है कि सभी लोगों को समान रूप से जाना जा सकता है। स्थानीय लोगों के पूछे जाने पर, यदि व्यक्ति अपनी परिवारिक पृष्ठभूमि के विषय में सत्यनिष्ठ एवं ईमानदार होता है तो लोगों पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ता है तथा वह उनकी स्वीकृति प्राप्त कर पाता है। क्षेत्र में शोधार्थी एक परिचित अजनबी की भूमिका निभाता है। क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद, व्यक्ति को स्वयं भी सहज होना चाहिए और दूसरों को भी सहज करने का प्रयास करना चाहिए। क्षेत्र में पहला दिन महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि शोधार्थी उस दिन लोगों को अपने बारे में बताता/बताती है तथा उनके बीच वहां होने का कारण भी व्यक्त करता/करती है। अत्याधिक सावधानी रखी जाती है कि लोगों के दिमाग में भय न पैदा हो। शोधार्थी क्षेत्र में लोगों से संपर्क स्थापित करता है और उनसे परिचित होना आरंभ करता है। उसे किसी का पक्ष नहीं लेना होता, किसी को नाराज़ नहीं करना होता अथवा उनके जीवन में हस्तक्षेप नहीं करना होता है। शोधार्थी न तो क्रांतिकारी होता है और न ही मिशनरी। वह लोगों को सुधारने अथवा परिवर्तित करने का प्रयास किए बिना देखता/देखती है और अपने जीवन से भिन्न उनके जीवन को देखने, अनुभव करने और विश्लेषित करने के उद्देश्य से भाग लेता है।

अपनी भूमिका सही प्रकार से निभाने के लिए, शोधार्थी को अपने अध्ययनाधीन लोगों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने होते हैं। संबंध स्थापित करने के लिए उसे उन लोगों के साथ रहना तथा उनके वातावरण के अनुसार स्वयं को ढालना पड़ता है। एक अच्छे व्यक्ति के रूप में अपनी छवि और प्रतिष्ठा स्थापित करना आवश्यक होता है। शोधार्थी की ऐसी स्वीकृति से खुले तथा प्राकृतिक उत्तर मिलने में मदद मिलती है। अंतर्दृष्टियां प्राप्त करने के लिए प्रेक्षक अपने विषयों के साथ समानुभूति विकसित करता/करती है। समानुभूति स्वयं को दूसरे के स्थान पर रखकर उनके विचारों और क्रियाओं को काल्पनिक रूप से अनुभव करने की क्षमता होती है। शोधार्थी अविवेकी नहीं होता, वह एक व्यक्ति की बातें दूसरे को नहीं कहता और अपने विषयों के मन से डर नहीं व्याप्त होने देता/देती है। कहीं भी और कभी भी उनके साथ मेलजोल रखते हुए और प्रतिष्ठा के लिए उनके साथ बिना किसी प्रतिस्पर्धा के शोधार्थी जल्दी में नहीं होता और वह कुछ लोगों के साथ तथा उनके माध्यम से कुछ अन्य लोगों के साथ निजी समीकरण बनाता है। इसके लिए उसे लोगों के साथ संपर्क स्थापित करने की कला विकसित करनी होती है। शोधार्थी लोगों से मिलने और बात करने में अच्छा लगता है और वह उनसे दुखी या व्यथित नहीं होता है। उसे क्षेत्र में बिना विवादास्पद बने परिस्थितियों से चतुराई के साथ निपटना होता है और सूचना एकत्रित करनी होती है। वह सभी वक्तव्यों को यूँ ही स्वीकार नहीं करता और उनकी अन्य लोगों से पुष्टि तथा जांच करता है और अपने निष्कर्ष निकालता है।

यद्यपि शोधार्थी परिचित लोगों के साथ निकट संबंध बनाता है, अत्यधिक निकटता और परिचय से बचना चाहिए क्योंकि उससे वस्तुनिष्ठता में बाधा उत्पन्न होती है। शोधार्थी को अपनी सीमाओं का पता होता है और वह संबंधों के बिगड़ने से पहले ही पीछे हट जाता है। आरंभ में, शोधार्थी एक या दो महत्वपूर्ण सूचकों पर ध्यान देता है और फिर धीरे-धीरे अन्य की ओर बढ़ता है। कुछ लोग स्वयं को शोधार्थी से दूर रखने का प्रयास कर सकते हैं तथा शोधार्थी को भी अन्य लोगों के साथ संबंध स्थापित करने के लिए कुछ लोगों से दूरी बनानी पड़ती है। शुरू में शांत रहने वाले लोग जरूरी नहीं बाद में भी ऐसे ही रहें।

24.7 मुख्य सूचक

सभी संपर्कों का समान महत्व नहीं होता है। आंरभिक अवस्था में शोधार्थी नेतृत्व के स्थानों पर मौजूद लोगों को इस आशा में पहचानने का प्रयास करता है कि वे महत्वपूर्ण संपर्क और अनौपचारिक प्रायोजकता उपलब्ध करवाएंगे। आरंभिक संबंधों को साधने के लिए व्यक्ति मार्गदर्शक अथवा किसी महत्वपूर्ण सूचक की तलाश करता है। मार्गदर्शक अध्ययनाधीन समूह अथवा विन्यास में पाए जाने वाले देशी व्यक्ति होते हैं। उन्हें यह आश्वस्त करने की आवश्यकता होती है कि मानवजाति वर्णनकर्त्ता वही लोग हैं जो वे स्वयं को बता रहे हैं ओर उनके अध्ययन का महत्व है। अध्ययन के महत्व को समझा जाना चाहिए तथा मार्गदर्शकों और उनके समूहों के लिए वह अध्ययन सार्थक होना चाहिए। मुख्य सूचक के लिए यह आश्वासन आवश्यक है कि शोधार्थी की उपस्थिति से उन्हें या समूह के अन्य सदस्यों को कोई हानि नहीं होगी। मार्गदर्शक (अथवा मुख्य प्रतिवादी) समुदाय में अन्य लोगों को आश्वस्त कर सकते हैं कि शोधार्थियों के आस पास होने से कोई हानि नहीं है।

संस्था अथवा समुदाय के मुखिया को मुख्य सूचक बनाने का परामर्श नहीं दिया जाता है क्योंकि मुखिया के पास गलत सूचना हो सकती है अथवा वह सामान्य लोगों के बीच हो रही घटना से अनभिज्ञ हो सकता हैं कई बार मार्गदर्शक अथवा सूचक बनने के इच्छुक लोग अपने ही समूहों तक सीमित होते हैं। कुछ लोग समूह के वंशज हो सकते हैं अथवा दूसरे लोगों को नापसंद हो सकते हैं; क्षेत्रकार्यकर्ताओं को सलाह दी जाती है कि वे ऐसे लोगों को अपना मार्गदर्शक अथवा मुख्य सूचक ना चुनें। आदर्श रूप से, चुने गए मार्गदर्शकों अथवा मुख्य सूचकों का विश्वासपात्र होना और समूह में अन्य लोगों द्वारा पसंद किया जाना आवश्यक होता है। परिणामस्वरूप मार्गदर्शकों और सूचकों के "फैल जाने या तीव्रगति से आगे बढ़ना (Snowballing)" से मानवजाति वर्णनकर्त्ता को क्षेत्र में उपस्थित होने के दौरान गतिशीलता में मदद मिलती है। फैल जाने या तीव्र गति से आगे बढ़ना (Snowballing) का अर्थ उन लोगों का उपयोग करना है जिन्हें आंरभिक सूचक ऐसे लोगों के रूप में परिचित करवाता है जो शोधार्थी की वैधता और सुरक्षा का समर्थन भी कर सकते हैं। मानवजाति वर्णनकर्त्ता के विश्वसनीय मार्गदर्शकों और सूचको का तानाबाना जितना बड़ा होता है उतना ही अधिक सहयोग प्राप्त करने की उनकी क्षमता और सुगमता अधिक होती है। समय के साथ जैसे-जैसे प्रतिवादियों का ताना बाना आकार में बढ़ता है, वैसे-वैसे विशिष्ट मार्गदर्शकों की आवश्यकता कम होती जाती है और शोधार्थी उस स्थान पर अपनी सामान्यतः स्वीकृत उपस्थिति के द्वारा अनौपचारिक जान पहचान बनाने लगते हैं।

अभ्यास 24.2

अभ्यास 24.1 में चुने गए विषय को आगे बढ़ाते हुए, भाग 24.5 से 24.7 तक पढ़ने के बाद, अपने शोध के विषय पर आधारित शोध अभिकल्पना तैयार कीजिए और यह निर्णय लीजिए की आप क्षेत्र में किस प्रकार प्रवेश करके अपने मुख्य सूचकों की पहचान के उद्देश्य से वहां लोगों के पास जाएंगे। एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए और निम्नलिखित विवरणों को उसमें शामिल कीजिए।

- मेरे शोध की अभिकल्पना
- मैं क्षेत्र में कैसे प्रवेश करूंगा
- मैं मुख्य सूचकों की पहचान कैसे करूंगा

24.8 सहगामी अवलोकन (क्षेत्रीय अनुसंधान)

सामान्यतः देखने की प्रक्रिया और अवलोकन में अंतर होता हैः अवलोकन अधिक केंद्रित और उद्देश्यपूर्ण होता है तथा किसी घटना को समझने के लिए किया जाता है। सामाजिक

शोध में अवलोकन का विशेष स्थान हैं क्योंकि इसे लोगों के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए मूलभूत उपकरणों में से एक माना जाता है और शास्त्रीय ब्रिटिश सामाजिक मानवविज्ञान और समाजशास्त्र के शिकागो विद्यालय में इसके उद्‌गम का बहुत अच्छी तरह प्रतिपादन किया गया है। सकारात्मक परंपरा इस पद्धति को अत्यंत महत्वपूर्ण मानती है क्योंकि यह माना जाता है कि सामाजिक व्यवहार का अवलोकन किया जा सकता है और यह संवेदी बोध के अधीन होता है। (एक अन्य पद्धति जिसके द्वारा शोधार्थी सामग्री/आंकड़े एकत्रित करते हैं को साक्षात्कार कहते हैं।)

अवलोकन द्वारा शोधार्थी लोगों को और उनके प्राकृतिक विन्यास में उन्हें अमौखिक रूप से प्रत्यक्ष देखते हुए उनके व्यवहार को समझता है जबकि साक्षात्कार में मौखिक संचार पर अधिक ध्यान होता है। समाजशास्त्रीय क्षेत्रकार्य में अवलोकन का प्रयोग सामग्री/आंकड़ें एकत्रीकरण की मुख्य तकनीकों में से एक के रूप में किया जाता है, जो अंतर्वेधी (intrusive) अर्थात् सहभागी के रूप में (बॉक्स 24.4 देखें) और गैर अंतर्वेधी (non-intrusive) अर्थात, गैर सहगामी के रूप में हो सकता है। ऐसे शोधार्थी जिनकी जांच के विषय में लोगों के साथ घुलना मिलना आवश्यक नहीं होता है, गैर सहगामी प्रकार के अवलोकन का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, कोई शोधार्थी विद्यार्थी शिक्षक के बीच परस्पर संबंध का, बिना उसमें हस्तक्षेप किए, एक लंबे समय तक अवलोकन कर सकता है। इस प्रकार के अवलोकन की एक पूर्व आवश्यकता यह है कि इसमें एक अवलोकन सूची के साथ कार्य करना पड़ता है जिसमें ऐसे विषयों का उल्लेख होता है जो शोधार्थी को किसी खास प्रकार के व्यवहार का अवलोकन करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। जटिल सामाजिक स्थितियों में गैर सहगामी अवलोकन को अधिक उपयोगी पाया गया है। साहित्य में एक अन्य शब्द, अर्ध सहभागी अवलोकन (quasi-participent observation) का भी प्रयोग होता है जिसका अर्थ यह है कि लोगों के सामाजिक जीवन में प्रेक्षक की आंशिक रूप से परिस्थिति-आधारित भागीदारी होती है।

बॉक्स 24.4: सहभागी अवलोकन

सहभागी अवलोकन में सूचकों के प्राकृतिक विन्यास में उनके प्रतिदिन के जीवन में भागीदारी द्वारा सामग्री/आंकड़ें एकत्रित किया जाता है। सामाजिक शोधार्थी लोगों की व्यवस्थाओं, सामाजिक अर्थों और उनकी गतिविधियों को समझने के लिए उन्हें देखता और उनसे बात करता है। ऐसी प्रक्रियाओं के पीछे शास्त्रीय मान्यता लोगों द्वारा सोचने, करने और कहने के बीच अंतर को खोजना है। शोधार्थी इसमें अध्ययनाधीन लोगों के प्रतिदिन के जीवन से जुड़े अपने निजी अनुभव का आयाम जोड़ देता है।

मेलिनोस्की द्वारा विवेचित सहभागी अवलोकन की पद्धति के लिए शोधार्थी को लोगों से अलग होकर उनके व्यवहार की व्याख्या करनी पड़ती है। यद्यपि आज विषयनिष्ठ स्थितियों (subjectivist positions) क्लिफोर्ड गीटर्स जिसका अग्रगामी है, का मानना है कि सहभागी अवलोकन में सामग्री/आंकड़ें एक़त्रीकरण का मुख्य साधन शोधार्थी होता है (बर्गेस 1982: 45 देखें)। मेलिनोस्की के अनुसार अवलोकन विवरण से अलग है जबकि गीटर्स अवलोकन और विवरण के बीच व्याख्यात्मक बोध को कड़ी मानता है। सकारात्मक परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हुए मेलिनोस्की ने वस्तुओं और आवासियों के सामाजिक जीवन के प्रति अलगाववादी दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता पर बल दिया जबकि गीटर्स (1973, 1988) के लिए, मानवजाति वर्णन अभ्यास, "गहन विवरण" का एक अभ्यास है जिसमें लोगों के समझने, सोचने और अपने व्यवहार के बताने के संदर्भ में व्याख्या करने का प्रयास किया जाता है। यहां यह बोध पूर्णतः अंतर-व्यक्तिनिष्ठ होता है क्योंकि अवलोकन करने वाला सामाजिक जीवन में डूब जाता है और वास्तविक अर्थों में सहभागी बन जाता है।

अंतरंगी और बाहरी व्यक्ति के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए मानवजाति वर्णनकर्त्ता को कुछ विशेष निजी गुण विकसित करने पड़ते हैं। बर्गिस (1982 : 45) के अनुसार ये अन्य "निजीक्षमताएं" अन्य लोगों के लिए जीवन और गतिविधियों से जुड़ने की क्षमता, उनकी भाषा और अर्थों को समझना, क्रिया तथा भाषण को याद रखना, विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में अनेक प्रकार के लोगों से मिलने की क्षमता हैं।

ब्रियूअर (2000 : 60) लिखता है कि ऐसे दो तरीके हैं जिनके द्वारा सामाजिक विज्ञान जगत को उसके यथार्थ रूप में समझने और उस जगत की सुनिश्चित मान ली गई सामान्य बोध प्रकृति को उजागर करने के लिए सहभागी अवलोकन का प्रयोग करता है। पहला तरीका सामाजिक विज्ञान में परंपरागत प्रयोग हैं जहां सामाजिक समूहों अथवा विशिष्ट क्षेत्रों का अंदर से अध्ययन किया जाता है। हालांकि 1960 के दशक में समाज विज्ञान में मानवजातीय प्रणाली विज्ञान और परस्पर क्रियावाद के कुछ नए रूपों से सामान्य ज्ञान की पद्धतियों और प्रणालियों में रुचि पैदा हुई जिससे रोजमर्रा की गतिविधियां पूर्ण होती हैं । ऐसे शोधार्थी अन्य बातों के साथ, चलते और सोते हुए भी किसी संस्थागत विन्यास में संवाद निर्णय लेने की प्रक्रिया के गठन का अध्ययन कर रहे हैं।

कुछ मामलों में सहभागी उन क्षेत्रों को देखता है जिनका वो पहले से ही हिस्सा होता है सहभागी अवलोकन को पद्धति के रूप में प्रयोग करने की आवश्यकताएं और समस्याएं उन समस्याओं से काफी भिन्न होती हैं जिनके लिए पारंपरिक मामले की भांति विन्यास अपरिचित होता है। कई बार नए विन्यास/क्षेत्र, जिसमें भूमिका स्वतः प्रेक्षक को खोज लेती है के आयामों को ढूँढने के लिए किसी मौजूदा भूमिका का प्रयोग किया जाता है। इसका एक अच्छा उदाहरण कोहेन और टेलर (1972) द्वारा कैदियों और जेल के जीवन के अध्ययन के लिए अंशकालिक शिक्षकों की भूमिका का उनका उपयोग हैं। अधिकांश भूमिकाओं में अवलोकन की रणनीति गुप्त हो सकती है और शोधार्थी को सफल होने के लिए विशेष कौशल की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए नई भूमिकाओं में प्रेक्षक को लोगों का विश्वास जीतना पडता है, समूह की प्रथाओं और मूल्यों के साथ जुड़ना पड़ता है और गतिविधियों और घटनाओं के पूर्ण अनुभव के लिए क्षेत्र में लंबा समय व्यतीत करना पड़ता हैं यदि भूमिका गुप्त होती है तो प्रेक्षक को इमानदारी मेहनती होनी चाहिए और अंतरंगी का दिखावा बनाए रखना चाहिए। क्षेत्र परिस्थिति के आधार पर शोधार्थी को सहभागिता के प्रकार के विषय में प्रायः निर्णय लेना पडता है। परिस्थितियां ये निर्धारित करती है कि भाग लेना है अथवा नहीं और वह किस सीमा तक होना हैं । और ऐसे संदर्भों में क्षेत्र परिस्थिति में पूर्णतः समाहित हो जाने की अपेक्षा शोधार्थी अपने हिसाब से भाग लेते हैं। ऐसी क्रियाओं को सामाजिक विज्ञान क्षेत्र कार्य में अर्थसहभागिता समझा जाता है। सहभागी अवलोकन में ना केवल अवलोकन होता है बल्कि शोधार्थी त्रिभुजन का भी प्रयोग करता है। अर्थात क्षेत्र के प्राथमिक और गौण स्रोत एकत्रित करने के लिए अनेक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है जैसे अवलोकन, वंशक्रम, साक्षात्कार, प्रश्नावलियां, सूचियां, जीवनवृत्त, केस अध्ययन, मौखिक इतिहास और अब सहभागी ग्राम मूल्यांकन (पी. आर. ए) तथा तीव्रग्राम मूल्यांकन (आर. आर. ए) । हालांकि गुणात्मक शोध का अधिक प्रयोग होता है, तर्कों को सुदृढ़ करने तथा केस अध्ययनों को तैयार करने के लिए मात्रिक विवरणों का भी प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार सहभागी अवलोकन, सामग्री/आंकड़ें एकत्रीकरण की मेहनती तथा कठिन प्रक्रिया है और जल्दबाजी में तैयार मानवजाति वर्णन इसका स्थान नही ले सकते हैं। इस पद्धति के मूल में लगाव और अलगाव होता है। सकारात्मक छोर पर अन्य किसी तकनीक द्वारा सामाजिक अर्थ, और इस पद्धति द्वारा प्राप्त प्रतिदिन की गतिविधि से जुड़ी मान्यताएं और विश्वास तथा भेद प्राप्त करना कठिन है। हालांकि सहभागी अवलोकन का दायरा और

सीमाएं शोधार्थियों की भूमिका और स्थान की भौतिक सीमाओं से प्रतिबंधित होती हैं। चूँकि यह पद्धति लघु विन्यास में सर्वाधिक उपयोगी होती है, प्राप्त किए गए सामान्यीकरण आंशिक चित्र प्रस्तुत करते हैं। बृहत तथा लघु विन्यास की कड़ियों की विवेचना करते समय निजवाचक शोधार्थियों (reflexsive researchers) को अपने मत के मूल्य के महत्वपूर्ण होने का पता लगता है।

अभ्यास 24.3

इस इकाई का भाग 24.8 पढ़िए और अपने अध्ययन केंद्र पर केवल एक महीने के लिए सहभागी अवलोकनकर्ता की भूमिका निभाईए जिससे इग्नू के विद्यार्थियों और केंद्र के बीच परस्पर संबंधों के विषय में जानकारी प्राप्त हो सके। सहभागी अवलोकनकर्ता के रूप में अपने अनुभव के आधार पर "सहभागी अवलोकन की कला" विषय पर पांच सौ शब्दों का एक निबंध लिखिए। अपने अध्ययन केंद्र पर एम.एस.ओ.-002 के अन्य विद्यार्थियों के निबंधों के साथ अपना निबंध बदलिए और अपने आस पास की सामाजिक वास्तविकता को समझनें के लिए जानकारी एकत्रित करने के उद्देश्य से सहभागी अवलोकन पर एक दूसरे के अनुभव पर चर्चा कीजिए।

24.9 सारांश

इकाई 24 में आपको क्षेत्र शोध के विस्तृत विषय पर जानकारी मिली, जो सामाजिक जगत के बारे में नवीन सूचना प्राप्त करने का मुख्य आधार हैं और जिसे समाजशास्त्री तथा मानवविज्ञानी समझने और समझाने का प्रयास करते हैं। इस इकाई में, संक्षेप में, क्षेत्र शोध का इतिहास खोजा गया है तथा मानवजाति वर्णन के विषय पर चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त इसमें शोध विषय के चयन, शोध योजना की अभिकल्पना और क्षेत्र में प्रवेश प्राप्ति से संबंधित मुद्दों पर विस्तार से बताया गया है। क्षेत्र में सूचना प्राप्त करने के मुख्य स्रोतों के विषय में बताते हुए इकाई 24 में यह भी बताया गया है कि सहभागी अवलोकनकर्ता होने का क्या अर्थ है और अपने क्षेत्र के सामग्री/आंकड़े विश्लेषण के दौरान इस अनुभव का प्रयोग कैसे किया जाता है। क्षेत्र शोध की इस विस्तृत प्रस्तावना ने क्षेत्र शोध पद्धतियों पर इकाई 25 में चर्चा का मार्ग प्रशस्त किया है जिसे हम अब देखेंगे।

24.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

ऐलेन, आर. एफ.1984, *ऐकनोग्राफिक रिसर्च: ए गाइड टू जनरल कंडक्ट*। ऐकेडेमिक प्रेसः लंदन (अध्याय 3 और 4, पृ. 13-62)।

श्री वास्तव, वी. के. 2004, *मेथेडोलॉजी एंड फील्डवर्क*। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेसः ऑक्सफोर्ड (प्रस्तावना, पृ. 1-50 तथा 149-156)।